खुसरो की पहेलियां

बादशाह का दरबार लगा हुआ था। अमीर खुसरो अपनी कविताएं सुना चुके थे और पहेलियां बुझा रहे थे। अमीर खुसरो की कविताओं और पहेलियों आदि का रंग लोगों पर चढ़ चुका था। बादशाह के दरबार में या किसी साहित्यिक गोष्ठी में वह जो भी रचना सुनाते, वह जल्दी ही लोगों में प्रचलित हो जाती।

उस दिन अमीर खुसरो कुछ अनोखी पहेलियां बुझा रहे थे। उनका उत्तर उन पहेलयिों में ही छिपा था। जैसे :

इधर को आवै, उधर को जावै, हर हर फेरे काठ को खावै,
ठहर रहती जिस दम वो नारी, खुसरो कहै बरै की आ री।

यहां 'बरै' का अर्थ है बढ़ई। स्पष्ट है, पहेली का उत्तर था आरी जिससे लकड़ी काटते हैं।

चोरी की, ना खून किया,
वाकस सिर क्यों काट लिया?

बिना अपराध किसी का सिर क्यों काट लिया गया? लेकिन नहीं, ये तो हाथ-पैर के नाखून हैं। इसी तरह :

बीसों का सिर काट लिया, ना मारा ना खून किया।

दोनों पहेलियों 'ना खून किया' में 'नाखून' शब्द छिपा है। और यही तो उत्तर है।

अमीर खुसरो की पहेलियों में एक खास बात थी। वह यह कि उनमें उलझाव नहीं था। न ही वे ऐसी चीजों के बारे में थीं जो बड़ी मुश्किल से मिलती हों। लोगों के रोजमर्रा काम आने वाली चीजों पर ही ये पहेलियां लिखी गई थीं। जैसे 'लोटा' के बारे में उन्होंने कहा है :

गोल-मटोल और छोटा-मोटा, हरदम वह जो जमीं पर लोटा।
खुसरों कहैं नहीं है झूठा, जो ना बूझे अकल का खोटा।

कई बार तो खुसरो बात की बात में पहेलियां कह देते थे। किसी के घर पिंजरे में तोता टंगा देखा। तुरंत ही एक मुकरी बना दी।

राम भजन बिन कभी न सोता, क्यों सखि साजन? ना सखि तोता।

इसी तरह घर के दरवाजे पर पड़े कुत्ते के लिए यह मुकरी कही :

दीहल छोड़ कहीं नहीं सुत्ता, क्यों सखि साजन? ना सखि कुत्ता।

कुम्हार अपने चाक को घुमाकर मिट्टी के बरतन बनाता है। उस समय उसकी कला देखते ही बनती है। घूमते हुए चाक पर रखा मिट्टी का लोंदा, कुम्हार की उंगलियों के सहारे पलभर में सुंदर बरतन बन जाता है। फिर कुम्हार एक धागा निकालता है। वह पानी में भीगा रहता है। उससे उस बरतन को काटकर अलग निकाल लेता है। अमीर खुसरो की नजर में भला ऐसा सुंदर दृश्य कैसे बच पाता! उन्होंने पहले धागे के बारे में कहा :

पानी में निसदिन रहे, जाके हाड़ न मांस, काम करे तलवार का, फिर पानी में बास।

फिर चाक पर रखे मिट्टी के लोंदे, उससे बनने वाले बरतनों और उनहें अलाव में पकाने के तरीके पर कहा :

चार अंगुल का पेड़, सवा मन का छत्ता, फल लगे अलग अलग, पक जाए इकट्ठा।

'भौंह' का रंग काला होता है। उसे नारी बनाते हुए खुसरो ने कितनी अच्छी पहेली कही :

स्याम बरन की है एक नारी, माथे ऊपर लागे प्यारी।
जो मानस इस अर्थ को खोले, कुत्ते की वह बोली बोले।
(उत्तर : भौं)

छतरी का प्रयोग तो सभी करते हैं। फिर भी खुसरो इसकी पहेली बुझाते हैं। कोई उत्तर न दे पाए तो वह भला क्या करें?

घूम-घूमेता लहंगा पहने, एक पांव से रहे खड़ी,
आठ हाथ हैं उस नारी के, सूरत उसकी लगे परी।
सब कोई उसकी चाह करें, मुसलमान, हिन्दू, छत्री,
खुसरो ने यह कही पहेली, दिल में अपने सोच अरी।

अमीर खुसरो की पहेलियों में उस जमाने के रहन-सहन के तरीकों की जानकारी मिलती है। उनसे उस समय के खाने-पीने, सिंगार-सजावट की चीज तथा कपड़ों आदि का पता चलता है। किसी के मुंह में पान की गिलौरी देखकर उन्होंने कहा था :

एक गुनी ने ये गुन कीन्हा, हरियल पिंजरे में दे दीन्हा।
देखो जादूगर का हाल, डारे हरा, निकाले लाल।

इसी तरह आंख के काजल के लिए 'शब्दों' वाली पहेली :

आदि कटे से सबको पाले, मध्य कटे से सबको मारे
अंत कटे से सबको मीठा, खुसरो वाको आंखें दीठा।

कुछ पहेलियां पक्षियों, कीट-पतंगों, फूलों आदि पर भी मिलती है। बंगु के बारे में उन्होने लिखा :

उज्जल बरन आधी तन, एक चित्त दो ध्यान।
देखत में तो साधु है, पर निपट पाप की खान।
फूलों पर गुनगुन करने वाले काले भौंरे के बारे में उन्होंने कहा :
श्याम बरन पीताम्बर बांधे, मुरलीधर नहीं होय,
बिन मुरली वह नाद करत है बिरला बूझे कोय।

काली काली जामुन पेड़ पर लदी हुई कितनी सुंदर लगती हैं! खुसरो ने एक पहेली जामुन के बारे में कही :

काजल की कजरौटी ऊधो का श्रंगार,
डरी डार पर मैना बैठी, है कोई बूझनहार?
खेत में लगे मक्का के भुट्टे की पहेली :
आगे आगे बहना आई, पीछे पीछे भैया,
दांत निकाल बाबा आए, बुरका ओढ़े मैया।

फूट बुरी होती है, इससे हमारी एकता भंग होती है। दो दोस्तों में फूट पड़ जाए या घर के लोगों में लड़ाई हो जाए तो घर नष्ट हो जाता है। लेकिन फूट नाम का फल जो खेत में उगता है, उसे सभी खाते हैं। खुसरो ने एक ही पहेला में इन दोनों बातों को बड़ी सफाई के साथ कह दिया :

खेत में उपजे सब कोई खाय, घर में होए घर खा जाय।